प्रेम का महत्व

जॉनी एप्पलसीड की कथा

लेखिका : ऐन डोनेगन जॉनसन

हिंदी : योगेश

प्रेम का महत्व
जॉनी एप्पलसीड की कथा

लेखिका : ऐन डोनेगन जॉनसन
हिंदी : योगेश

जॉन केरी को समर्पित, जो शायद वास्तव में जॉनी एप्पलसीड को समझ पाता।

यह कहानी है एक बहुत प्रेममय स्वभाव के व्यक्ति, यानि जॉनी एप्पलसीड की। आगे वर्णित कहानी उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। उसके जीवन के अन्य ऐतिहासिक तथ्यों का विवरण पृष्ठ ६३ पर उपलब्ध है।

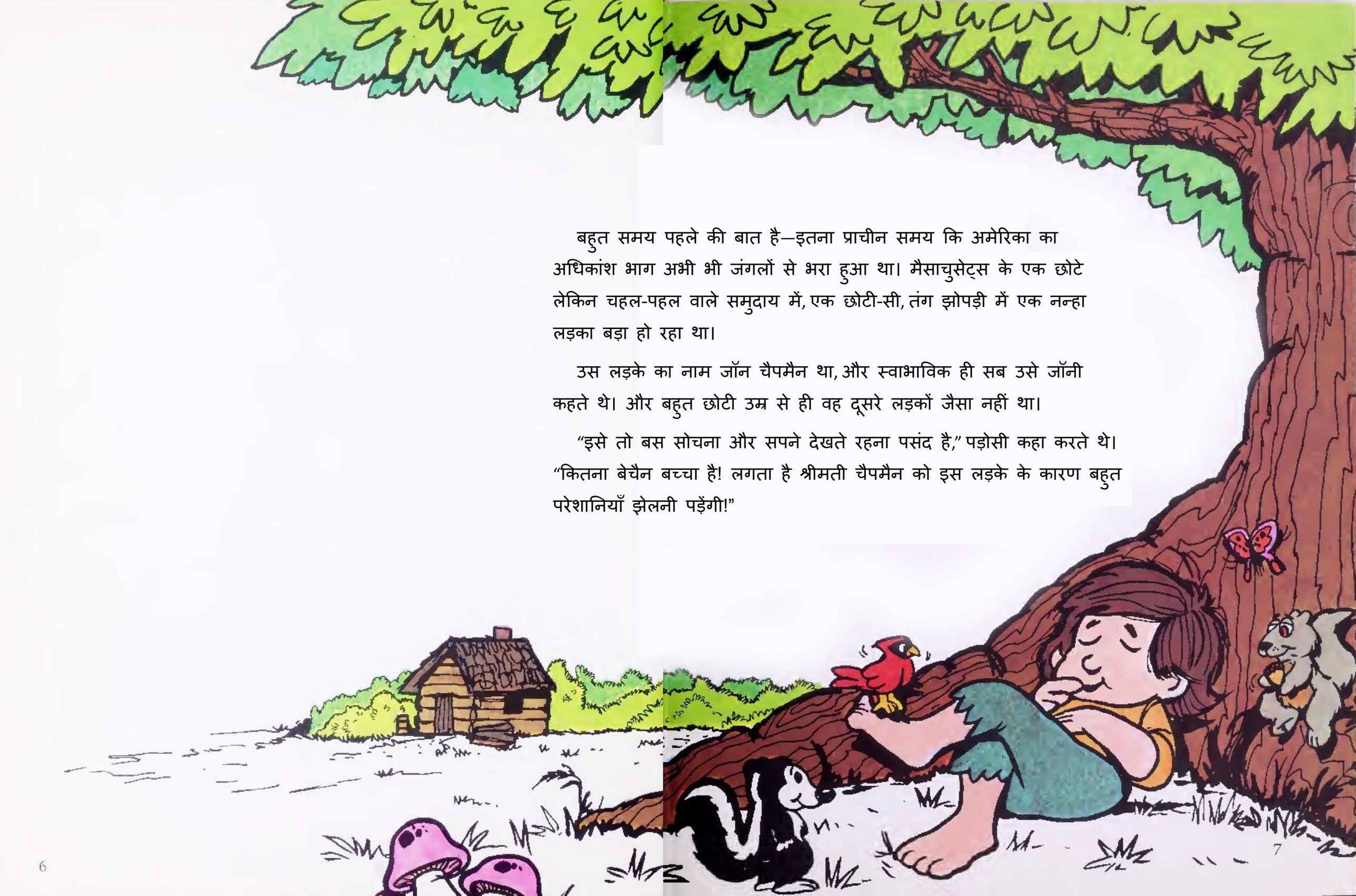

बहुत समय पहले की बात है—इतना प्राचीन समय कि अमेरिका का अधिकांश भाग अभी भी जंगलों से भरा हुआ था। मैसाचुसेट्स के एक छोटे लेकिन चहल-पहल वाले समुदाय में, एक छोटी-सी, तंग झोपड़ी में एक नन्हा लड़का बड़ा हो रहा था।

उस लड़के का नाम जॉन चैपमैन था, और स्वाभाविक ही सब उसे जॉनी कहते थे। और बहुत छोटी उम्र से ही वह दूसरे लड़कों जैसा नहीं था।

"इसे तो बस सोचना और सपने देखते रहना पसंद है," पड़ोसी कहा करते थे। "कितना बेचैन बच्चा है! लगता है श्रीमती चैपमैन को इस लड़के के कारण बहुत परेशानियाँ झेलनी पड़ेंगी!"

लेकिन जॉनी की सौतेली माँ इन गपशपों पर कोई ध्यान नहीं देती थीं।

"जॉनी के दिल में सबके लिए बहुत प्यार है," वह अपने-आप से कहतीं, जब वह उसे उसके छोटे भाई-बहनों के साथ देखतीं। "पालने को झुलाने या लोरी गाने में उससे बेहतर कोई नहीं।"

जॉनी एक मेहनती लड़का भी था। वह हमेशा लकड़ियों के ढेर तक दौड़कर आग के लिए लकड़ियाँ लाने को तैयार रहता, या जब उसकी सौतेली माँ को पानी की ज़रूरत होती तो कुएँ तक फुर्ती से भाग कर जाता।

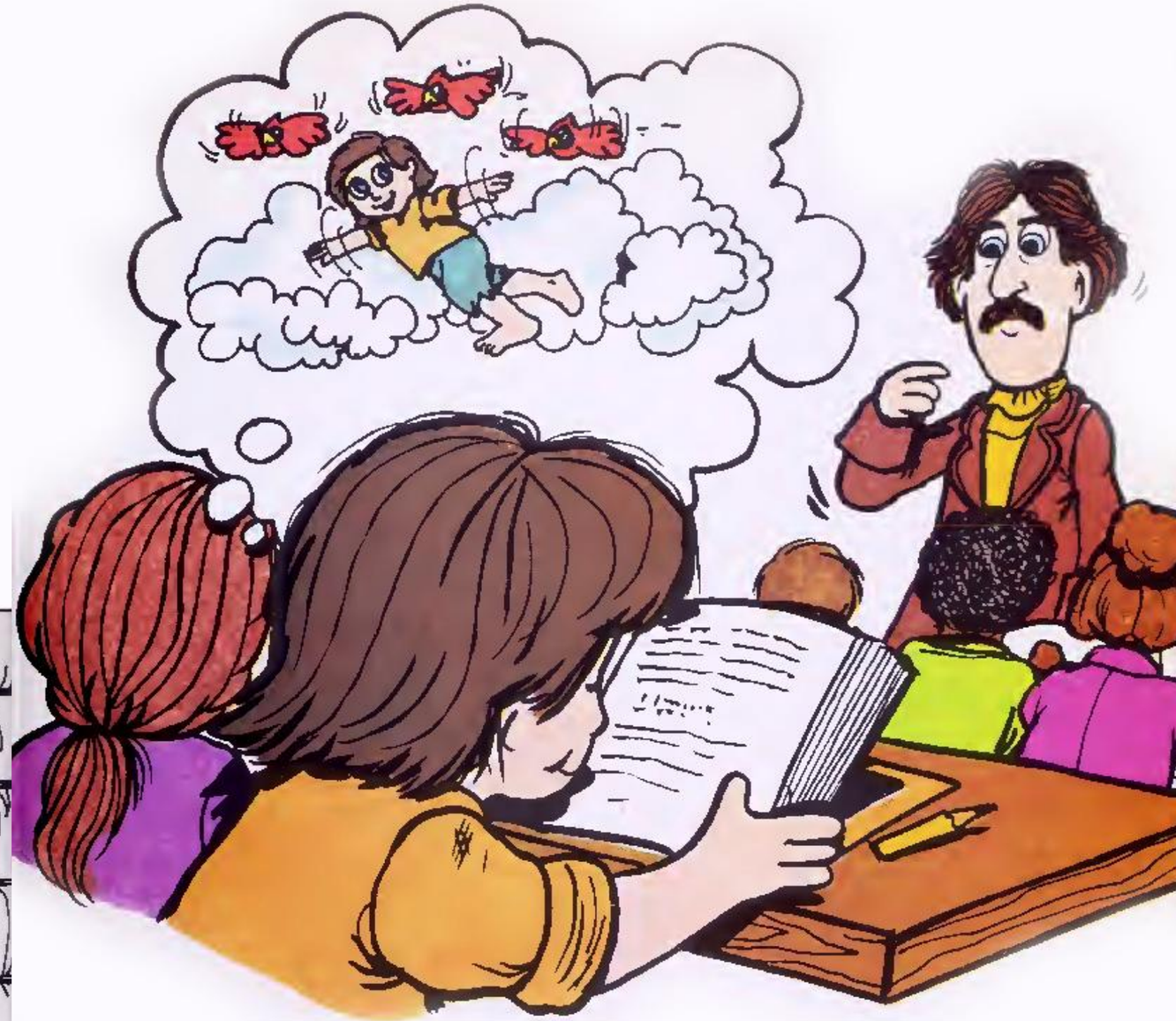

यह सच है कि जॉनी सपनों में खोया रहता था, इसलिए उसे स्कूल के अध्यापक से कुछ परेशानियाँ झेलनी पड़ती थीं। लेकिन कुल मिलाकर वह ठीक-ठाक पढ़ता था, और बहुत छोटी उम्र में ही उसने जोड़-घटाना सीख लिया था, और अपनी बाइबल पढ़ना भी। और यह बात सामने आई कि बाइबल पढ़ना जॉनी को बेहद प्रिय था।

जब वह न तो स्कूल में होता, न अपने काम-काज में लगा होता, और न ही परिवार के नए बच्चे की देखभाल में मदद कर रहा होता, तब जॉनी अकेले जंगल की ओर चला जाता। वह किसी पेड़ के नीचे बैठकर ज़ोर-ज़ोर से बाइबल पढ़ता।

अजीब बात यह थी कि कभी-कभी जानवर भी उसे सुनने आ जाते। तब जॉनी पढ़ना बंद कर देता और उन्हें स्वर्ग के बारे में बताने लगता—कि वहाँ कैसा होता है, और यह कि निश्चय ही गिलहरियों और बिज्जुओं के लिए भी वहाँ जगह होगी। आखिर प्रभु ने ही तो उन सबको भी बनाया है।

पक्षी जॉनी के सिर के ठीक ऊपर, नीची डालियों पर बैठकर सुनते रहते। खरगोश उसके पैरों के पास आकर सट जाते। कभी-कभी कोई युवा हिरण जंगल से निकलकर आता और बड़ी सी किताब वाले उस काले बालों वाले लड़के को टकटकी लगाए देखता रहता।

पतझड़ के मौसम की एक बहुत ख़ूबसूरत दोपहर थी, जब खुले मैदानों में धूप गर्म लग रही थी। तभी एक नीलकंठ पक्षी उड़कर आया और जॉनी के कंधे पर बैठ गया। उसने अपनी आदत के अनुसार शोर मचाती, चहकती-सी आवाज़ निकाली। फिर वह उड़ गया और ओझल हो गया।

पास की धारा में एक रैकून (नन्हे भालू जैसा दिखने वाला एक जानवर) झींगा धो रहा था। उसने नीलकंठ को उड़ते देखा और कहा,
"मुझे लगता है, वह पक्षी तुम्हें कुछ बताने की कोशिश कर रहा था।"

"शायद वह मुझे अलविदा कह रहा था," जॉनी ने धीरे से कहा। "बर्फ पड़ने से पहले उसे दक्षिण की ओर उड़ जाना है।"

तभी जॉनी को अचानक एहसास हुआ कि वह एक रैकून के साथ बातचीत कर रहा है। यह सच था कि जॉनी अक्सर जानवरों से बात करता था, लेकिन किसी जानवर को जवाब देते सुनकर—और वह भी मनुष्यों की भाषा में—वह सचमुच चौंक गया।

"मेरा नाम रैंडी है," रैकून ने कहा। "मैं काफी समय से तुम्हें देख रहा हूँ। मैं तुम्हारा दोस्त बनना चाहता हूँ। मुझे लगता है तुम्हें एक रोएँदार दोस्त रखने में कोई आपत्ति नहीं होगी, है न?"

दिल ही दिल में जॉनी जानता था कि रैकून रैकून की भाषा में बात करते हैं, मनुष्यों की भाषा में नहीं। उसे पता था कि उसने रैंडी की कल्पना कर ली है। लेकिन उसे ऐसे दोस्त की ज़रूरत थी जो उसे समझ सके—जो समझे कि उसे अकेले भटकना और मैसाचुसेट्स के पश्चिम में फैली धरती को खोजने के बड़े-बड़े सपने देखना क्यों पसंद है। वह जंगली इलाका था, जहाँ जंगल इतने घने थे कि पेड़ों के नीचे चलने वाला व्यक्ति पूरे दिन सांझ जैसा अँधेरा महसूस कर सकता था।

इसलिए जब जॉनी घर की ओर चला, तो वह रैंडी को अपने साथ ले आया। और जब उसकी झोपड़ी दिखाई दी, तो वहाँ बच्चों की भीड़ लगी हुई थी और सामने एक गाड़ी खड़ी थी।

"पापा!" जॉनी चिल्लाया। "वे अपनी यात्रा से घर आ गए हैं!"

जॉनी दौड़ पड़ा, क्योंकि वह अपने पिता से बहुत प्रेम करता था। जंगल में बिताए समय के बाद, उसे अपने पिता की बढ़ईगीरी की दुकान में बिताया समय सबसे ज़्यादा अच्छा लगता था, जहाँ वह अपने पिता, नैथेनिएल चैपमैन, को बर्तन, मथानी और मसालों के डिब्बे बनाते हुए देखता था, जिन्हें वे पूरे राज्य की बस्तियों में लोगों को बेचते थे।

"जब तुम ज़रा-से और बड़े हो जाओगे," उसके पिता हमेशा कहते, "तो तुम मेरे साथ चलकर ये लकड़ी के सामान बेचने में मदद कर सकोगे।"

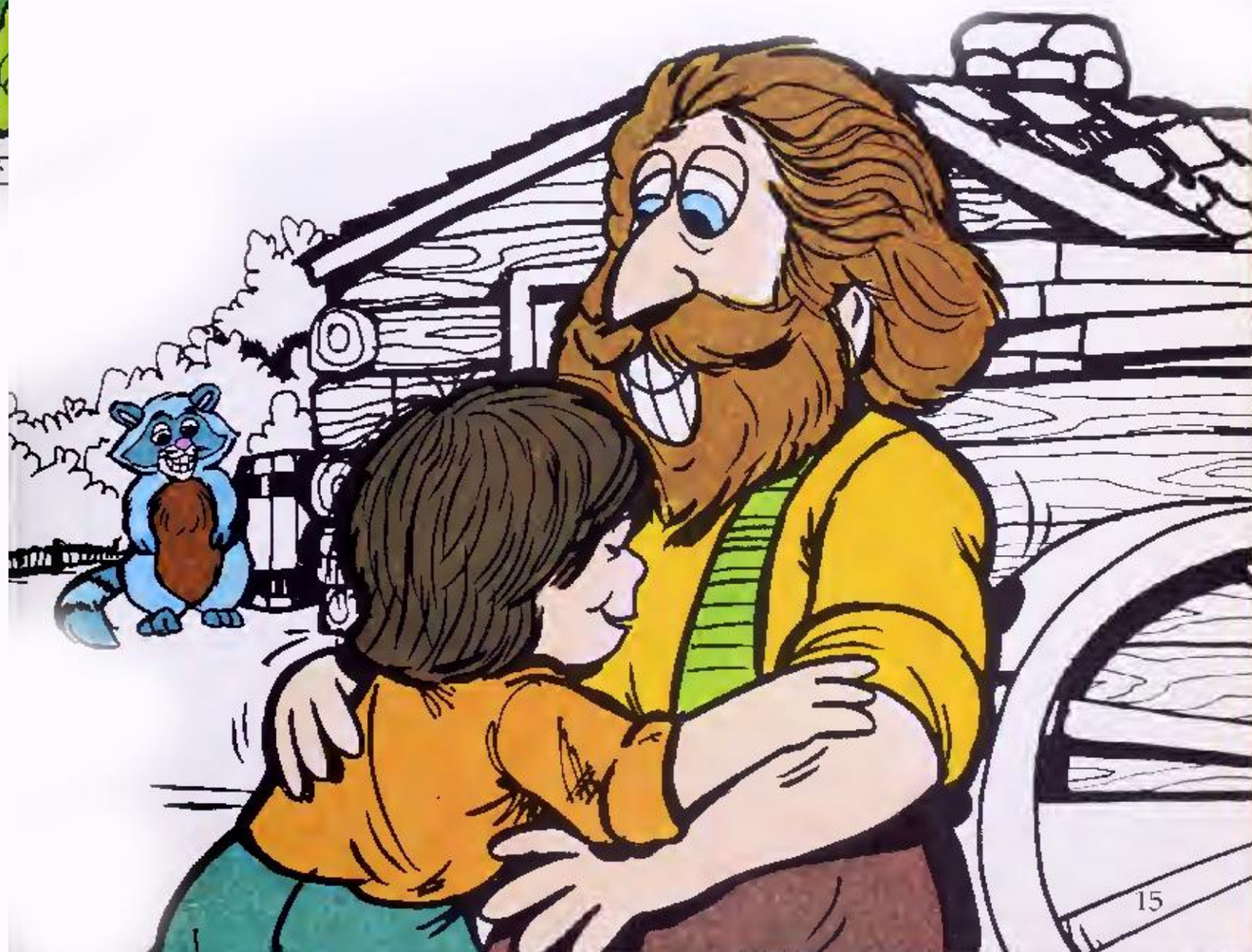

जॉनी अभी उतना बड़ा नहीं हुआ था, इसलिए उस दिन उसने अपने पिता की मदद ज़रूर की, लेकिन बस पुराने घोड़े को गाड़ी से खोलकर उसे अस्तबल में ले जाने में।

"शायद जब मैं बसंत में जाऊँ," जॉनी के पिता ने कहा, "तो तुम मेरे साथ चल सको।"

फिर श्री चैपमैन घर के भीतर चले गए।

रैंडी रैकून देखता रहा, जबकि जॉनी भूसे की मुट्ठियाँ लेकर घोड़े को रगड़ रहा था।

"तुम बहुत प्यारे हो," जॉनी ने कहा और घोड़े की नाक पर चुम्मा दिया।

"अगले बसंत," उसने कहा। "अगले बसंत मैं पापा के साथ जा सकूँगा!"

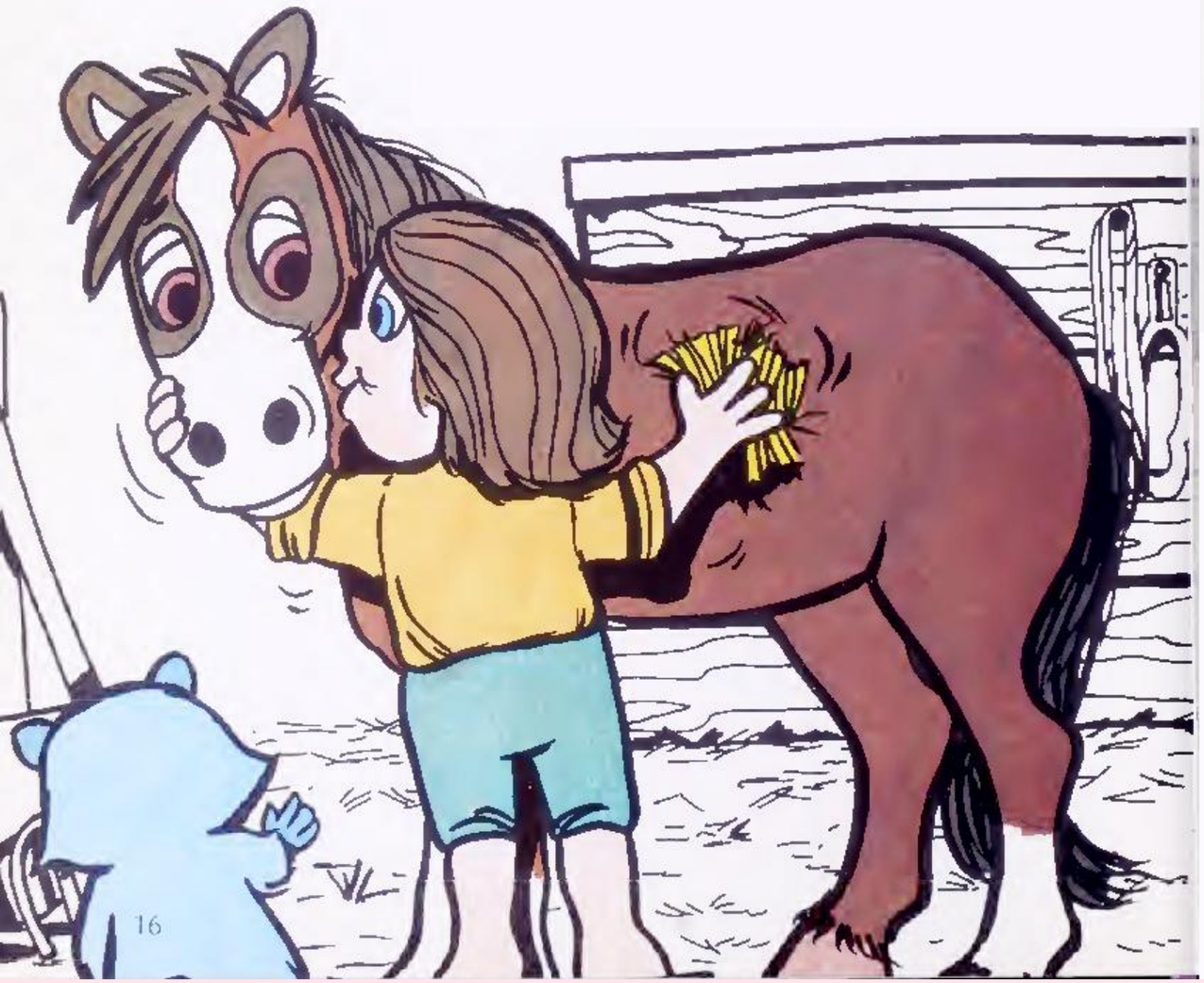

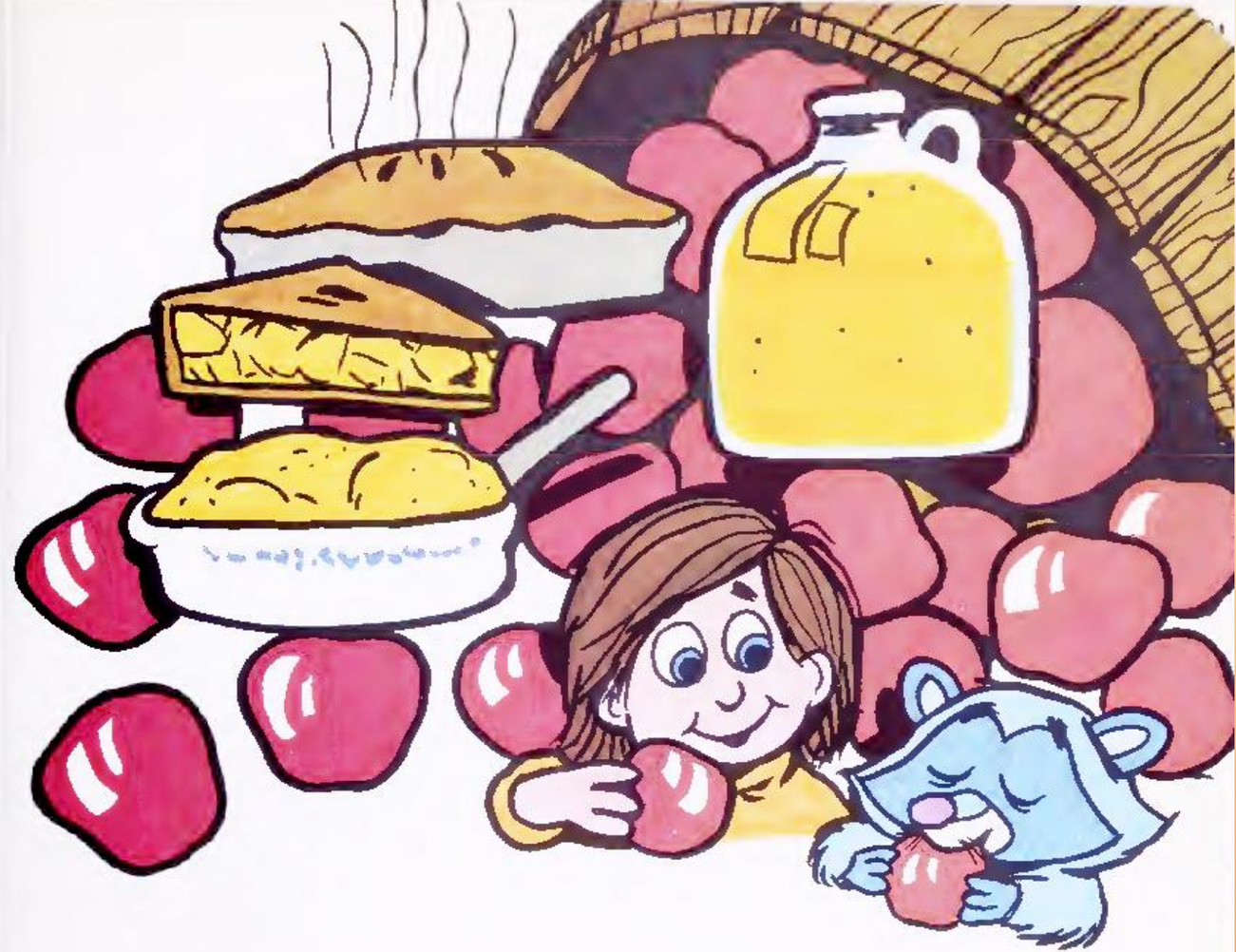

जॉनी ने यह विचार पूरे शरद ऋतु अपने मन में सँजोए रखा, जब सेब पेड़ों पर पक रहे थे। उसने उस साल सेब तोड़ने में मदद की। उसने देखा कि उसकी सौतेली माँ रसोई में कुछ सेब धागों में पिरोकर सुखा रही थीं, ताकि सर्दियों में सेब की चटनी बन सके। कुछ सेब तहखाने में रख दिए गए, जहाँ वे ज़्यादा समय तक सुरक्षित रहते। उनसे एप्पल पाई (Apple Pie) नाम का मिष्ठान्न बनाया जाता। और जो सेब ज़मीन पर गिर गए थे, उन्हें चक्की में ले जाया गया, जहाँ उन्हें दबाकर रस निकाला जाता।

"क्या सेब से बेहतर कुछ हो सकता है?" जॉनी ने कहा।

"मुझे लगता है प्रभु ने उन्हें हमें आनंद देने के लिए ही धरती पर रखा है!"

"बिलकुल," रैंडी रैकून ने कहा। और चूँकि जॉनी हमेशा उससे कहता था कि प्रभु सबको समान रूप से प्रेम करते हैं, इसलिए रैंडी ने जॉनी की टोकरी से अपने लिए एक सुंदर, लाल सेब उठा लिया।

जब सर्दी आई, तो चैपमैन की झोपड़ी में चरखा घूमने लगा और करघा खटखटाने लगा। जॉनी की सौतेली माँ कपड़ा बुन रही थीं।

"तुम्हारे लिए नए कपड़े, जॉनी," उन्होंने कहा।
"तुम डरावने पुतले की तरह फटे-पुराने कपड़ों में नहीं घूम सकते।"

जॉनी अपनी सौतेली माँ से बहुत प्रेम करता था और उसके लिए बनाए गए नए कपड़ों के लिए आभारी था। वह खुद को साफ-सुथरा रखने की कोशिश करता और बालों में कंघी करना याद रखता।

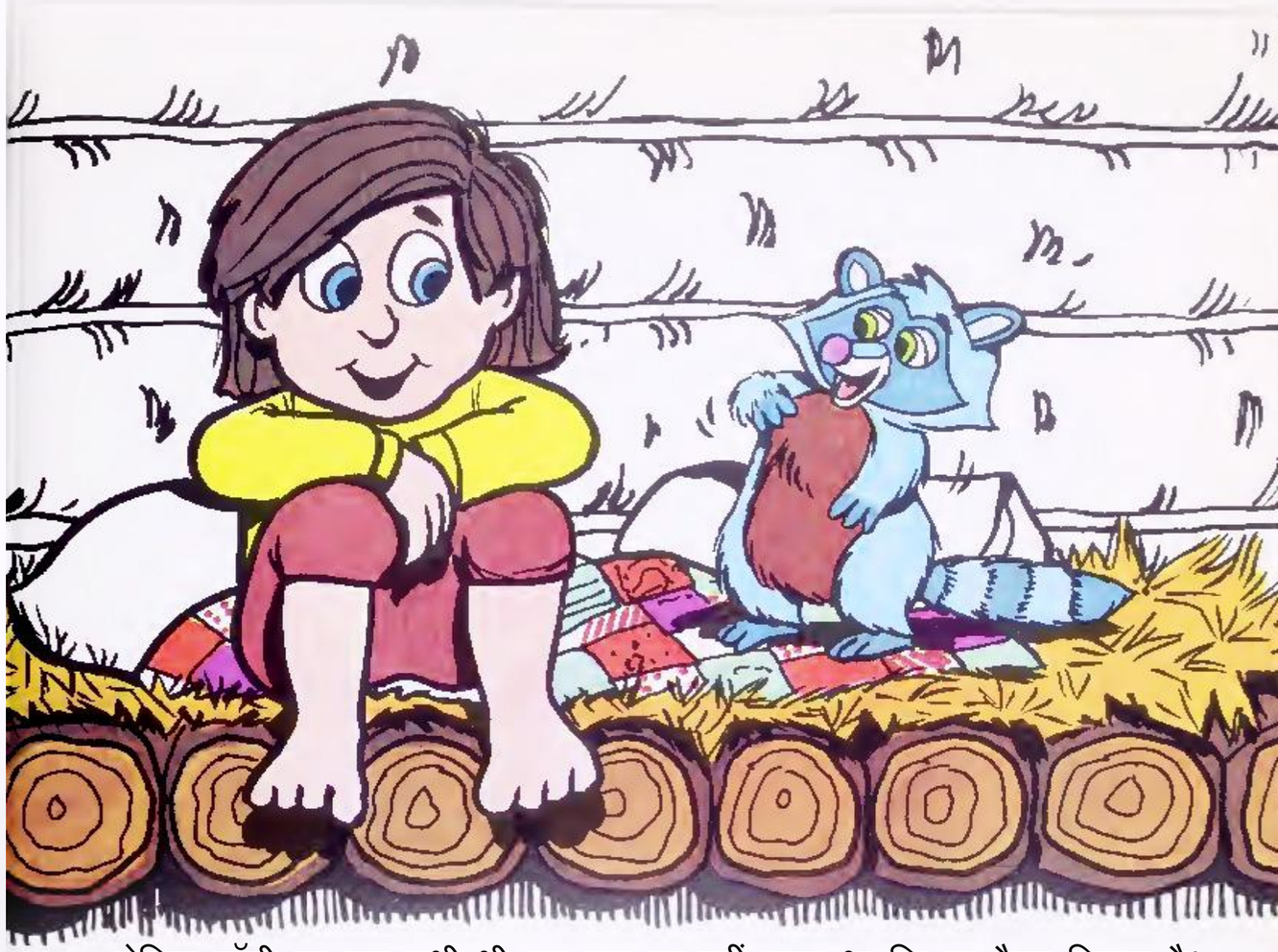

लेकिन जॉनी का मन कभी भी इस बात पर नहीं रहता था कि वह कैसा दिखता है। रात को, जब जॉनी और रैंडी झोपड़ी के ऊपर बने मचान में अपने बिस्तर पर चढ़ते, तो जॉनी अपने सपने रैंडी को फुसफुसाकर बताता।
"पापा के साथ यह यात्रा तो बस शुरुआत होगी," वह कहता।
"एक दिन मैं पश्चिम की ओर यात्रा करूँगा—बहुत दूर ओहायो तक, जहाँ धरती अभी भी नई है। जब मैं बंदूक उठाने लायक बड़ा हो जाऊँगा, तब मैं जा सकूँगा।"

"बंदूक उठाने लायक बड़ा?" रैंडी चिल्लाया।
"क्या यह वही जॉन चैपमैन है जो अपने जंगल के दोस्तों को बाइबल पढ़कर सुनाता है? जो कहता है कि प्रभु सबको समान रूप से प्रेम करते हैं?
क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारे साथी प्राणियों को भी उतना ही जीने का अधिकार है जितना तुम्हें?"

जॉनी ने इन बातों के बारे में पूरी लंबी सर्दी भर सोचा और उसने तय कर लिया कि रैंडी सही था। “मैं कभी बंदूक नहीं उठाऊँगा,” उसने निश्चय किया। “मैं किसी जीवित प्राणी को कभी गोली नहीं मारूँगा।”

वसंत आया और जॉनी के लिए अपने पिता के साथ लकड़ी के बर्तन बेचने के लिए निकलने का समय आ गया। जॉनी बहुत उत्साहित था। वह इससे पहले कभी अपने घर से दूर नहीं गया था। स्वाभाविक ही रैंडी भी उसके साथ था। इसी तरह जॉनी और रैंडी दोनों ने स्प्रिंगफ़ील्ड के पास सड़क पर अग्रदूतों (पायनियर्स) के एक परिवार को देखा।

उनके पास एक बड़ी-सी छत वाली बैलगाड़ी थी, जिसे बैलों की एक जोड़ी खींच रही थी। उस पर घर का सारा सामान और ज़रूरी वस्तुओं के ढेर लगे थे। लेकिन जब जॉनी और रैंडी ने उन्हें देखा, तब वे कहीं जा नहीं रहे थे। वे बस सड़क के किनारे घास के मैदान में खड़े थे और सेब के पेड़ों पर खिले गुलाबी फूलों को ऊपर देखकर निहार रहे थे।

“वे इतने उदास लग रहे हैं,” जॉनी ने रैंडी से कहा। “क्या उन्हें नहीं पता कि पश्चिम की ओर जाना एक बड़ा रोमांच होगा?”

“उन्हें पता है,” रैंडी ने कहा। “बस उन्हें उन चीज़ों को अलविदा कहना पड़ रहा है जिन्हें वे पीछे छोड़ रहे हैं—जैसे सेब के पेड़।”

“क्या जंगलों में सेब के पेड़ नहीं होते?” जॉनी ने पूछा।

“जंगलों में सेब के पेड़ नहीं होते,” रैंडी ने कहा। “वहाँ सिर्फ़ जंगल के पेड़ होते हैं—बीच, ओक और फ़र। और वे पेड़ तो बस जगह पाने के लिए एक-दूसरे से सटकर उगते हैं!”

जॉनी ने इस बारे में सोचा और उसका मन भारी हो गया।
वसंत में खिलते सेब के पेड़ नहीं।
गरमियों में फल नहीं।
पतझड़ में खाने के लिए ताज़े सेब नहीं। सेब का रस नहीं।
लंबी, कठोर सर्दी में न सेब का मक्खन, न सेब की चटनी।

अग्रदूत परिवार के लिए जॉनी के मन में गहरा प्रेम और करुणा उमड़ पड़ी। "सेब नहीं..." उसने धीमी, उदास आवाज़ में कहा, जब वह उन्हें अपने वैगन में रवाना होते देख रहा था।

"नई ज़मीन में रास्ता बनाने के लिए कुछ न कुछ तो छोड़ना ही पड़ता है," रैंडी ने कहा।

"एक दिन मैं इस बारे में कुछ करूँगा!" जॉनी ने घोषणा की। "मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि किसी को भी सेब छोड़ने न पड़ें!"

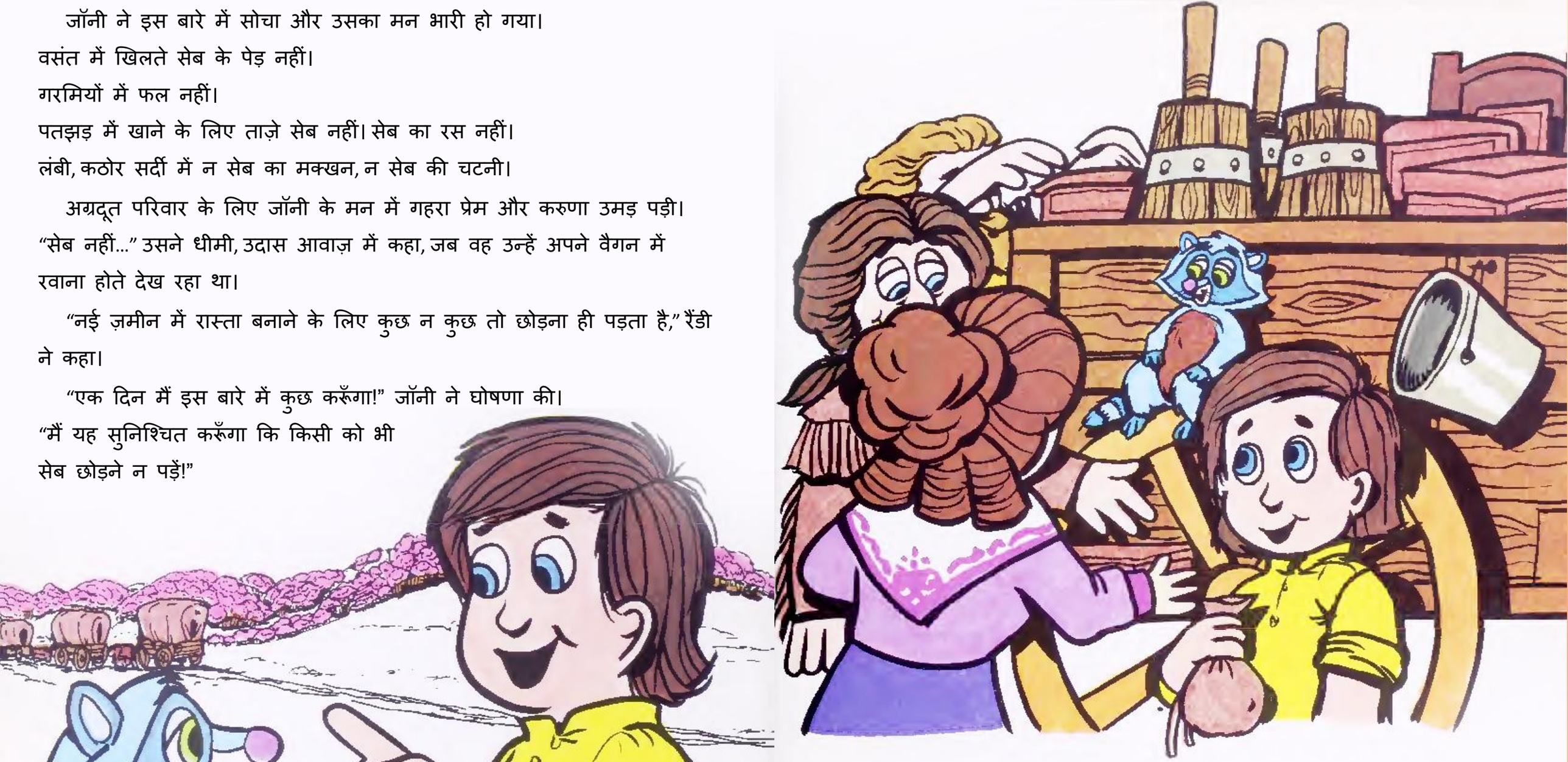

आने वाले वर्षों में जॉनी अक्सर अपने पिता के साथ जाता और लकड़ी के बर्तन बेचने में मदद करता। रैंडी भी साथ जाता और जॉनी को बड़ा होते देखता रहा। और जब जॉनी किशोरावस्था में एक मजबूत, हट्टा-कट्टा युवक बन गया, तो उसने अपना काम खुद करने के लिए घर छोड़ दिया।

क्या तुम अंदाज़ा लगा सकते हो कि उसने क्या किया?

जब जॉनी अठारह वर्ष का हुआ, तो उसे लगा कि अब वह तैयार है। "नथानिएल," उसने अपने छोटे भाई से कहा, "इस वसंत मैं ओलीअन (Olean) जा रहा हूँ। वह न्यूयॉर्क राज्य के पश्चिमी हिस्से में बहुत दूर है। पापा के भाई बेन वहाँ रहते हैं। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

नथानिएल को साथ ले जाने का कोई खास कारण नहीं था। वह तो सिर्फ़ ग्यारह साल का था। "समझ नहीं आता मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ," जॉनी ने रैंडी से कहा।

"क्योंकि वह लड़का तुम्हें बहुत चाहता है और वह जाना चाहता है," रैंडी ने कहा। "तुम भी उससे प्रेम करते हो—अगर मैं बहुत गलत नहीं हूँ।"

उसने खुद को एक ऐसे व्यक्ति के यहाँ काम पर रख लिया, जिसे बाग़ों के बारे में सब कुछ पता था। और जब जॉनी उस आदमी के लिए काम करता, तो वह सपने देखने में समय बर्बाद नहीं करता। वह ध्यान से सीखता!

जल्द ही उसे पता चल गया कि सेब के बीज कितनी गहराई पर बोने चाहिए। उसे यह भी मालूम हो गया कि गर्म मिट्टी में कितना पानी देना चाहिए ताकि बीज अंकुरित हों। उसने बाग़ों की देखभाल करना सीखा और यह भी कि नए पेड़ों को एक-दूसरे से पर्याप्त दूरी पर कैसे लगाना चाहिए। उसने पेड़ों की छँटाई करना सीखा, और यह भी जाना कि अगर किसी पेड़ को कहीं और ले जाना हो, तो उसकी जड़ों को गीली काई में अच्छी तरह लपेटना पड़ता है, ताकि वे सूखें नहीं।

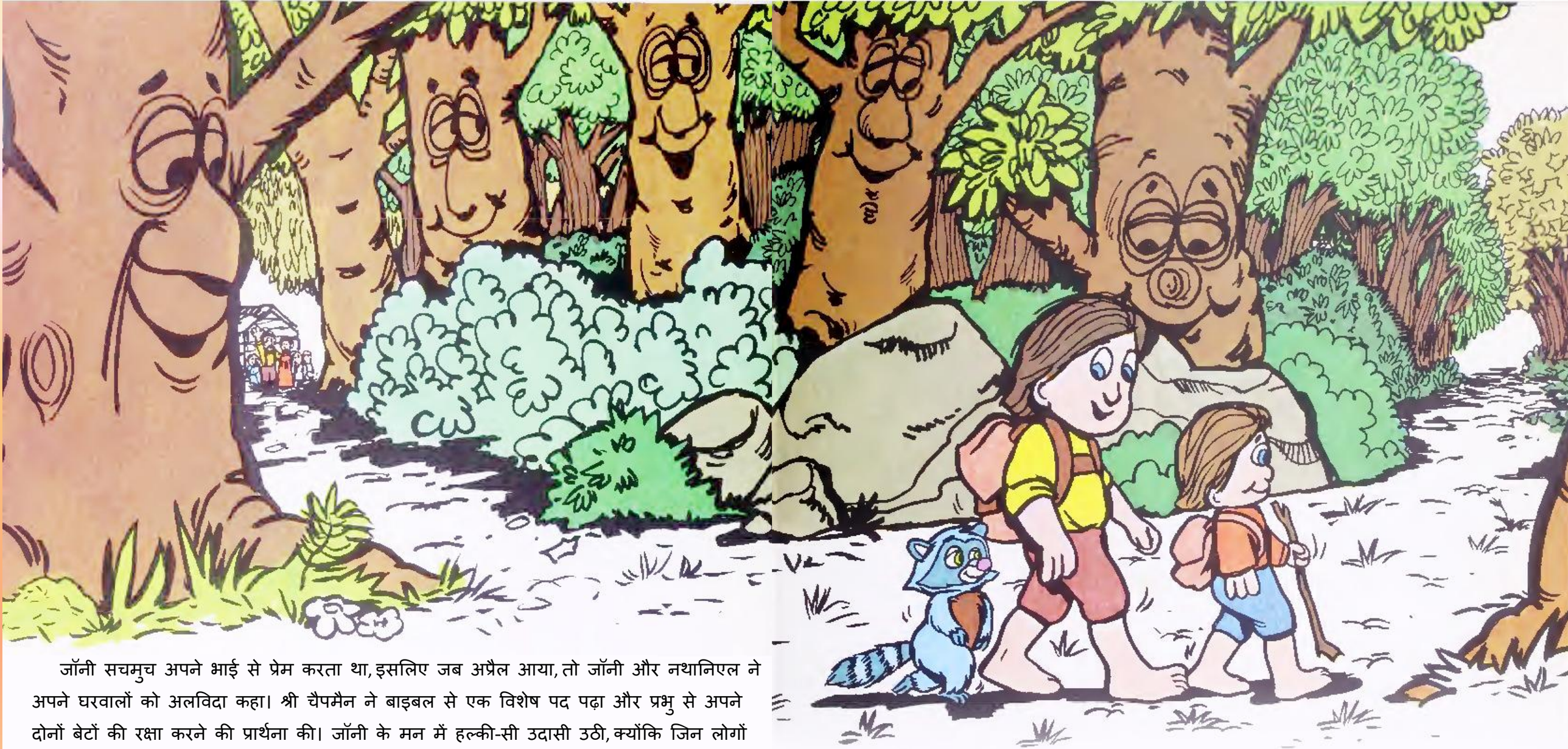

जॉनी सचमुच अपने भाई से प्रेम करता था, इसलिए जब अप्रैल आया, तो जॉनी और नथानिएल ने अपने घरवालों को अलविदा कहा। श्री चैपमैन ने बाइबल से एक विशेष पद पढ़ा और प्रभु से अपने दोनों बेटों की रक्षा करने की प्रार्थना की। जॉनी के मन में हल्की-सी उदासी उठी, क्योंकि जिन लोगों को वह बहुत प्रिय मानता था, उन्हें छोड़ना कोई छोटी बात नहीं थी।

"तुम ठीक रहोगे!" उसके पिता ने कहा। "तुम अच्छे लड़के हो और तुम्हें सफलता ज़रूर मिलेगी। अब अगर पश्चिम की खेती की ज़मीन उतनी ही उपजाऊ है जितनी लोग कहते हैं, तो खबर भेजना—हम भी आ जाएँगे!"

जॉनी ने वादा किया कि वह ज़रूर बताएगा, और वह और नथानिएल निकल पड़े, पीछे-पीछे उछलता हुआ रैंडी भी था। लड़के पैदल चल रहे थे, और जॉनी जहाँ भी देखता, उसे ऊँचे-ऊँचे जंगल के पेड़ दिखाई देते, जो आकाश को ढक लेते थे।

"इनके बजाय किसी सेब के पेड़ को देखना अच्छा लगता," उसने कहा।

"और इन जंगलों में खुले मैदान और बाग़ भी होने चाहिए।"

"मुझे लगता है कि यहाँ खुले मैदान होंगे," रैंडी ने कहा। उसे जंगल के पेड़ों से विशेष आपत्ति नहीं थी—हालाँकि उसे भी बाग़ उतने ही पसंद थे जितने किसी और को।

एक बहुत, बहुत लंबी यात्रा के बाद, जॉनी, नथानिएल और रैंडी ओलीअन पहुँचे, और उन्हें एक बड़ा आश्चर्य हुआ।

तुम क्या सोचते हो, क्या था वह आश्चर्य ?

बेन चैपमैन की वह झोपड़ी, जहाँ वे वर्षों पहले बस गए थे, खाली पड़ी थी।

"कितनी निराशा की बात है!" रैंडी ने कहा। "मुझे यक़ीन है तुम्हारे चाचा ओहायो नदी के आसपास की नई ज़मीन की ओर चले गए हैं। क्यों न तुम थोड़ा आराम करो और फिर उनके पीछे जाओ?"

रैंडी की बात जॉनी को बिल्कुल सही लगी—शायद इसलिए कि रैंडी की बात सुनते समय वह वास्तव में अपनी ही समझ की बात सुन रहा था। "हमें सामान की ज़रूरत पड़ेगी," उसने कहा, "इसलिए हमें काम करना होगा। लेकिन हम यह कर सकते हैं।"

जॉनी निश्चय ही यह कर सकता था। उसे रोपण और छँटाई के बारे में इतना ज्ञान था कि ओलीअन का एक किसान उसे काम पर रखने को तैयार हो गया। उस पतझड़ में, जब सेबों की फसल काटी गई, जॉनी सेबों से भरी एक गाड़ी साइडर मिल तक ले गया। जब सेब पीसकर गूदा बनाए गए और साइडर निकाला गया, तो जॉनी ने देखा कि मिल के चारों ओर हर जगह सेब के बीज बिखरे पड़े थे।

"इनमें से हर एक असल में एक सेब का पेड़ है—बस धरती में अपनी जगह मिलने का इंतज़ार कर रहा है ताकि वह बढ़ सके," उसने रैंडी से कहा। "बीजों को यूँ ही व्यर्थ जाने देना अफ़सोस की बात है।"

जॉनी ने जितने भी बीज इकट्ठा कर सकता था, सब जमा कर लिए। उसने बीज धोए, सुखाए और एक बोरी में डाल दिए। और उस दिन से जॉनी ने कभी भी सेब का कोई बीज नहीं फेंका।

अगले वसंत में, जॉनी, नथानिएल और रैंडी फिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़े। उनके चाचा ने ओहायो के मैरिएटा के पास की ज़मीन पर खेती करने की बात की थी। लड़कों ने उन्हें वहीं ढूँढने का निश्चय किया।

कभी-कभी वे अग्रदूत परिवारों के साथ यात्रा करते थे। तब जॉनी बड़ी-बड़ी गाड़ियों को चलाने में मदद करता था। कभी-कभी वे पैदल चलते थे। और कभी-कभी वे पानी के रास्ते जाते थे, क्योंकि जहाँ इंसानी बस्तियां अभी नहीं थीं उन इलाकों में नदियाँ ही राजमार्गों की तरह थीं।

नदी के रास्तों का उपयोग करने के लिए लड़कों को एक डोंगी चाहिए थी, और जॉनी खोखले तने वाली नाव बनाने में निपुण था। उसने और नथानिएल ने पहले गिरे हुए एक लट्ठे में छेद काटा। फिर उस छेद में आग जलाई ताकि लकड़ी अंदर से खोखली हो जाए और नाव सीधे तैर सके।

"तुम कुछ भी कहो," रैंडी ने कहा, "लेकिन अग्रदूतों का जीवन आलसी लोगों के लिए नहीं है।"

"आलसी लोग घर बैठे रह सकते हैं और अपने ऊपर काई जमने दे सकते हैं," जॉनी हँसा।

"नैट और मैं तो पश्चिम की उस हरी-भरी धरती को देखना चाहते हैं। और अगर वह खेती के लिए अच्छी निकली, तो मैं पापा को ख़बर भेजूँगा—जैसा मैंने वादा किया है।"

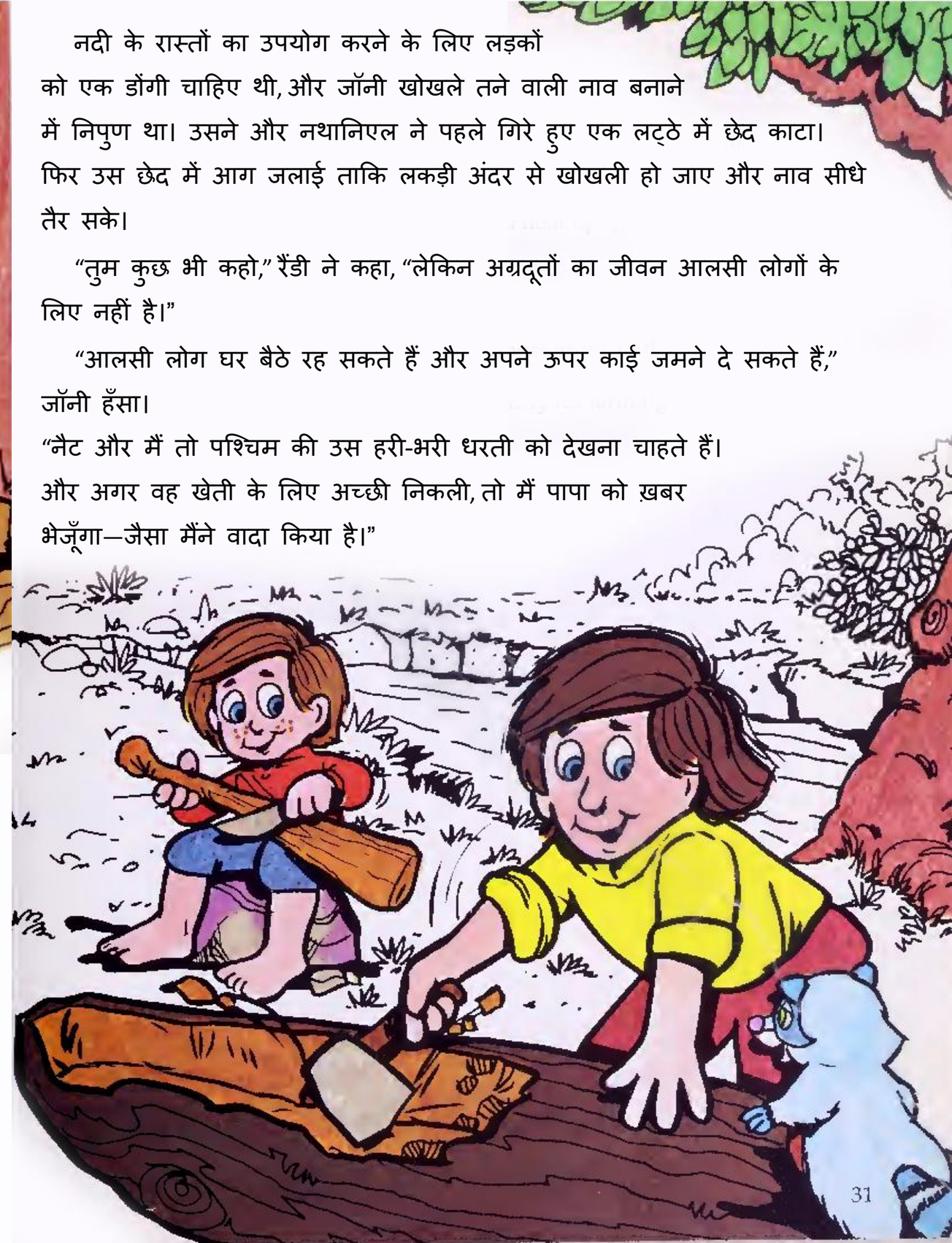

फिर जॉनी और नथानिएल अपनी कश्ती में निकल पड़ते, आगे की नोक पर रैंडी सवार रहता, नदी में भँवरों या उथले हिस्सों पर नज़र रखते हुए जो उन्हें पलट सकते थे। रास्ते में बार-बार जॉनी इस बारे में बात करता कि जंगल कितने शानदार दिखेंगे जब उनमें खुले मैदान होंगे, घर बसेंगे और खुले स्थानों में सेब के पेड़ उगेंगे।

"जो सेब का बाग़ सही ढंग से लगाया जाए और प्रेम से छाँटा जाए— वह तो सौ वर्षों के लंबे समय तक जीवित रहता है और लोगों को आशीर्वाद देता है," उसने रैंडी से कहा।

आख़िरकार जॉनी और नथानिएल मैरिएटा पहुँचे, और उन्हें बाज़ार के दिन शहर में बेन चैपमैन मिल गए। अपने भाई के बेटों को देखकर, और यह सुनकर कि उसका भाई भी आ सकता है और ओहायो के किनारे की उपजाऊ ज़मीन पर बस सकता है, अंकल बेन इतने खुश हुए कि वे वहीं सड़क पर नाचने लगे।

"अरे वाह!" रैंडी ने कहा।
"ऐसा स्वागत और खुशी का इज़हार मैंने कभी नहीं देखा। यह तो अपने रिश्तेदारों को देखकर सचमुच बहुत प्रसन्न है!"

वह मैरिएटा के पास डक क्रीक के किनारे बस सकता था और वहाँ खुश रह सकता था। लेकिन जॉनी के लिए एक जगह बस जाना संभव नहीं था। वह उतना ही बेचैन था जितना वह बचपन में जंगलों में भटकते समय हुआ करता था।

"अब समय आ गया है कि मैं अपने जीवन का काम शुरू करूँ," उसने रैंडी से कहा।

"तुम्हें औज़ारों की ज़रूरत होगी," रैंडी ने कहा, जिसे भली-भाँति पता था कि जॉनी का जीवन-कार्य क्या होगा। "एक फावड़ा, एक कुल्हाड़ी और एक कुदाल।"

जॉनी ने सिर हिलाया। "और मुझे अपनी बाइबल भी चाहिए।"

"फिर से जानवरों को उपदेश देने का इरादा है?" रैंडी ने पूछा।

"क्यों नहीं?" जॉनी ने कहा। "उसी तरह तो मैं तुमसे मिला था। लेकिन मैं ऐसे लोगों को भी ढूँढ़ लूँगा जो मेरे साथ बाइबल पढ़ें। तुम देखते रहना।"

तो जॉनी ने अपनी प्रिय पुस्तक को अपनी कमीज़ के भीतर रख लिया। तब तक उसके पास सेब के बीजों से भरा एक फूला हुआ थैला था, जिसे उसने कंधे पर डाल लिया, और उसके साथ ही मक्के के आटे से भरा एक और थैला भी लटका लिया।

उसने अपने औज़ार उठाए, और क्योंकि उसके पास अपने खाना पकाने के बर्तन को रखने की कोई और जगह नहीं थी, उसने उसे अपने सिर पर पहन लिया—और वह एक बहुत ही शानदार टोपी लग रही थी। और अंततः जॉनी ने अपना असली भटकता हुआ, जीवन शुरू किया।

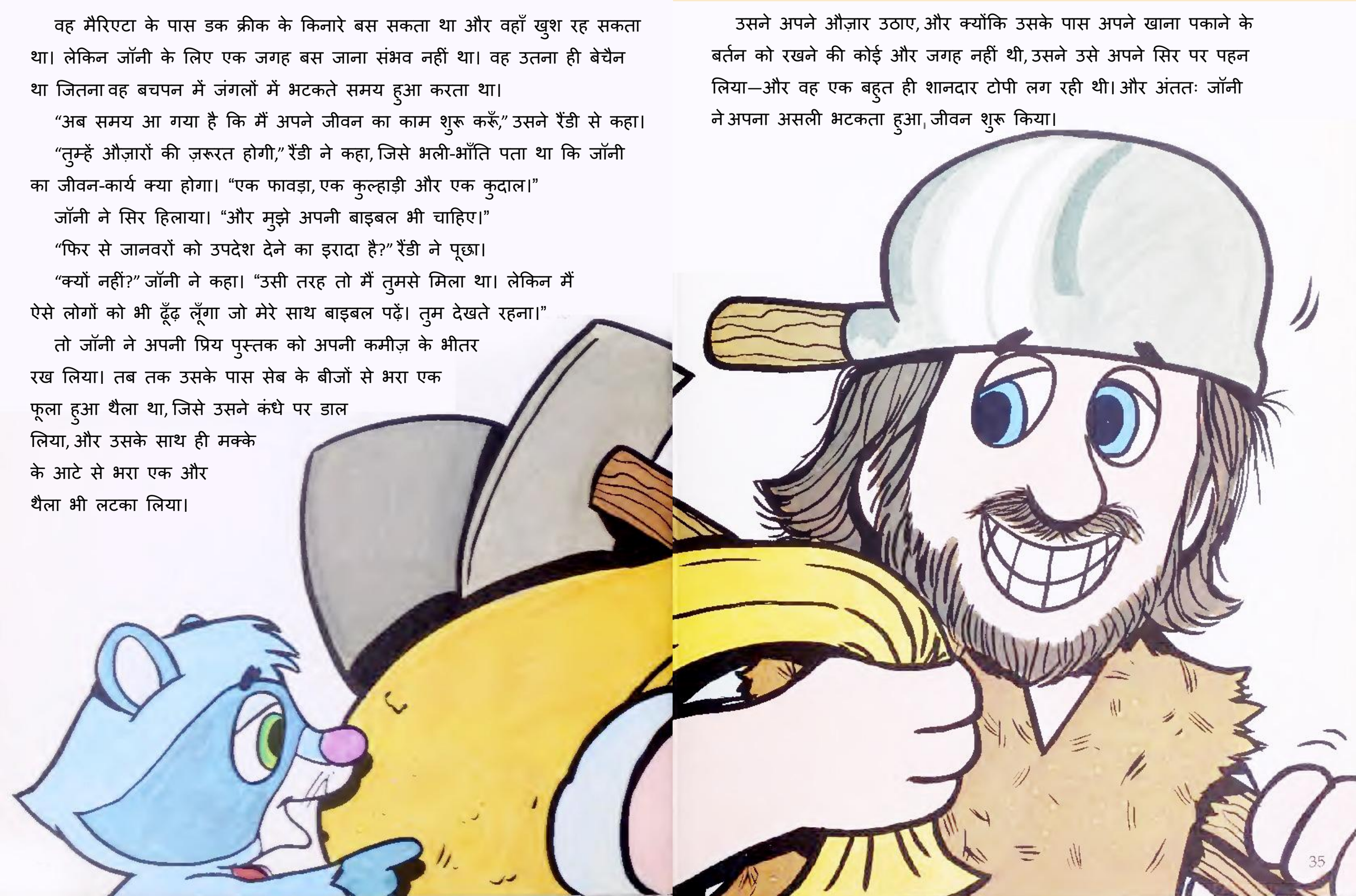

कुछ समय तक उसने पश्चिमी पेंसिल्वेनिया में काम किया। वहाँ उसकी नर्सरियाँ थीं, जिनमें हज़ारों कोमल, छोटे पेड़ लगे थे। और वह हमेशा वहीं लौट आता था—कभी भी किसी साइडर मिल के पास से बिना गुज़रे नहीं जाता, बल्कि गूदे में बीज खोजता रहता था।

लेकिन वास्तव में जॉनी को आकर्षित करने वाली चीज़ थी वह अटूट, अनछुआ जंगल। वह उन अग्रदूतों के बारे में सोचता था जो उसके बाद आने वाले थे। वह सोचता था कि सेब के पेड़ देखकर उन्हें कितनी खुशी होगी। वह बच्चों के बारे में सोचता था—कैसे वे पतझड़ में पेड़ों पर चढ़ेंगे और पके हुए सेबों को दाँतों से कुतर-कुतर कर खाएँगे।

जॉनी के कपड़े घिस गए, उसके जूते टूट गए, लेकिन उसे कोई परवाह नहीं थी। वह ओहायो भर में पैदल घूमता रहा—ज़मीन तैयार करता, बीज बोता, अपने बाग़ों को पानी देता और उनकी देखभाल करता। जब उसका काम पूरा हो जाता, तो वह किसी नई जगह जाकर फिर से वही सब करता।

फिर भी, जॉनी अपने छोटे-छोटे पेड़ों का स्नेही मित्र था। वह हमेशा उनके पास लौटकर आता था। जब वे दो साल के हो जाते, तो उन्हें फिर से रोपना पड़ता था ताकि उनके बीच पर्याप्त दूरी रहे। जॉनी हमेशा यह ध्यान रखता था। फिर वह उनकी छँटाई करता और उनके पीछे ऐसे लगा रहता, जैसे कोई दयालु पिता अपने प्रिय बच्चों की देखभाल करता हो।

कभी-कभी जॉनी अपने पेड़ दान कर देता था। अगर कोई आदमी गरीब होता, और उसके पास पेट भरने के लिए बच्चे होते और ऐसी पत्नी होती जिसके जीवन में थोड़ी खुशी की ज़रूरत होती, तो जॉनी उसके लिए पेड़ दे देता। बच्चे गर्मियों में डालियों के नीचे खेल सकते थे। पतझड़ की हवाओं के साथ जब सेब नीचे गिरने लगते, तो वे उन्हें बटोरने दौड़ पड़ते।

कभी-कभी जॉनी अपने पेड़ बेचता भी था। उसे भी तो खाने की ज़रूरत थी, जैसे और लोगों को होती है। अगर किसी बसने वाले के पास पैसे होते और वह दे सकता, तो जॉनी को अपने पेड़ों की अच्छी कीमत मिल जाती।

और वह उस पैसे का क्या करता था?

खैर, ज़ाहिर है उसका थोड़ा-सा हिस्सा मकई के आटे पर खर्च होता था, क्योंकि जॉनी चैपमैन को मकई की रोटी बहुत पसंद थी। सच तो यह है कि वह लगभग उसी पर जीता था—रोटी और सेब।

लेकिन मकई का आटा इतना महँगा नहीं था। जॉनी अपने पैसे से कुछ और भी करता था। क्या तुम अंदाज़ा लगा सकते हो कि वह क्या था?

उसने उस पैसे से जानवर खरीदे—घोड़े, खच्चर और बैल, जो अब ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर भारी बोझ खींचने के काबिल नहीं रहे थे। जॉनी उन्हें उसी तरह प्यार करता था जैसे वह बच्चों और सेब के पेड़ों से करता था। अगर उसे कहीं किसी घोड़े के साथ दुर्व्यवहार या उसे छोड़ दिए जाने की खबर मिलती, तो वह उसे खरीद लेता—और फिर उसे किसी ऐसे किसान को दे देता जो उसके साथ दयालु हो। यही था जॉनी के पैसे का उपयोग।

कभी-कभी जॉनी किसी ऐसे आदमी की ज़मीन पर बाग़ लगाता, जिसे पेड़ों की ज़रूरत होती। “अब इनमें से आधे पेड़ तुम्हारे हैं,” वह खुशी से भरे बसने वाले से कहता, “और आधे मेरे हैं, और हो सकता है मैं उन्हें मँगवा लूँ।”

फिर जॉनी इंतज़ार करता, जब तक उसे कोई ऐसा किसान न मिल जाए जिसके आधा दर्जन बच्चे सेब के स्वाद के लिए तरसते हों, और जिसकी पत्नी ने दुल्हन बनने के बाद से सेब के फूल न देखे हों।

जॉनी उस किसान को काग़ज़ की एक पर्ची देता। “यह कुछ पेड़ों का आदेश है,” वह कहता। “इसे राजमार्ग पर नीचे जाबेज़ हिगिन्स के पास ले जाना, और वह तुम्हें बीस छोटे पौधे दे देगा।”

इसी तरह जॉनी अपने पेड़ों को मँगवाता था।

जल्द ही जॉनी पूरे सीमांत क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया। ऐसा लगता था कि बसने वाले चाहे जितना भी पश्चिम की ओर बढ़ें, जॉनी उनसे पहले ही वहाँ पहुँच चुका होता था। और उसके बारे में अजीब-अजीब कहानियाँ सुनाई जाती थीं।

लोग कहते थे कि रात में जब वह अपनी आग के पास बैठकर मकई की रोटी खाता था, तो भेड़िए उसके चारों ओर सूँघते हुए आ जाते थे, लेकिन उसे कभी नुकसान नहीं पहुँचाते थे। वे कहते थे कि वह भालू को अपना भाई कहता था, और कि वह कौवों की बातें समझ सकता था, जब वे जंगल के जीवों की गतिविधियों के बारे में आपस में कांव-कांव करते थे।

ये कहानियाँ सच थीं या नहीं, कोई निश्चित रूप से नहीं जानता था। जॉनी अपने बारे में ज़्यादा बात नहीं करता था। लेकिन एक बात पक्की थी—जब वह जंगल से बाहर आता, सिर पर अपना खाना पकाने का बर्तन और पीठ पर सेब के बीजों की बोरी लटकाए हुए, तो सारे बच्चे उसे देखने दौड़ पड़ते थे।

"जॉनी ऐपलसीड!" वे चिल्लाते।

"वह आ रहा है! जॉनी ऐपलसीड! नमस्ते, जॉनी!"

बसने वाले हमेशा जॉनी का बड़ा आदर-सत्कार करते थे। हर झोपड़ी में उसका स्वागत होता था, और आग के पास सबसे अच्छी जगह उसी की होती थी। बच्चे उसके पास सिमटकर बैठ जाते, जब वह अपनी मकई की रोटी, सेब के पकौड़े और जंगली शहद खाता था। जब वह खा लेता, तो वह बाइबल से पद पढ़ता। और फिर वह खबरें सुनाता।

सीमांत क्षेत्र में लोग खबरों के लिए तरसते थे—दूर पूरब में हो रही महत्वपूर्ण घटनाओं की बातें सुनने के लिए, वॉशिंगटन की, जहाँ सरकार के बड़े लोग रहते थे।

ऐसा नहीं था कि जॉनी कभी वॉशिंगटन गया हो, या उसके पास भी पहुँचा हो। वह नहीं गया था। लेकिन वह रास्तों और राजमार्गों पर ऐसे लोगों से मिलता था जो वहाँ गए होते थे, और उनकी खबरें वह बसने वालों तक पहुँचा देता था।

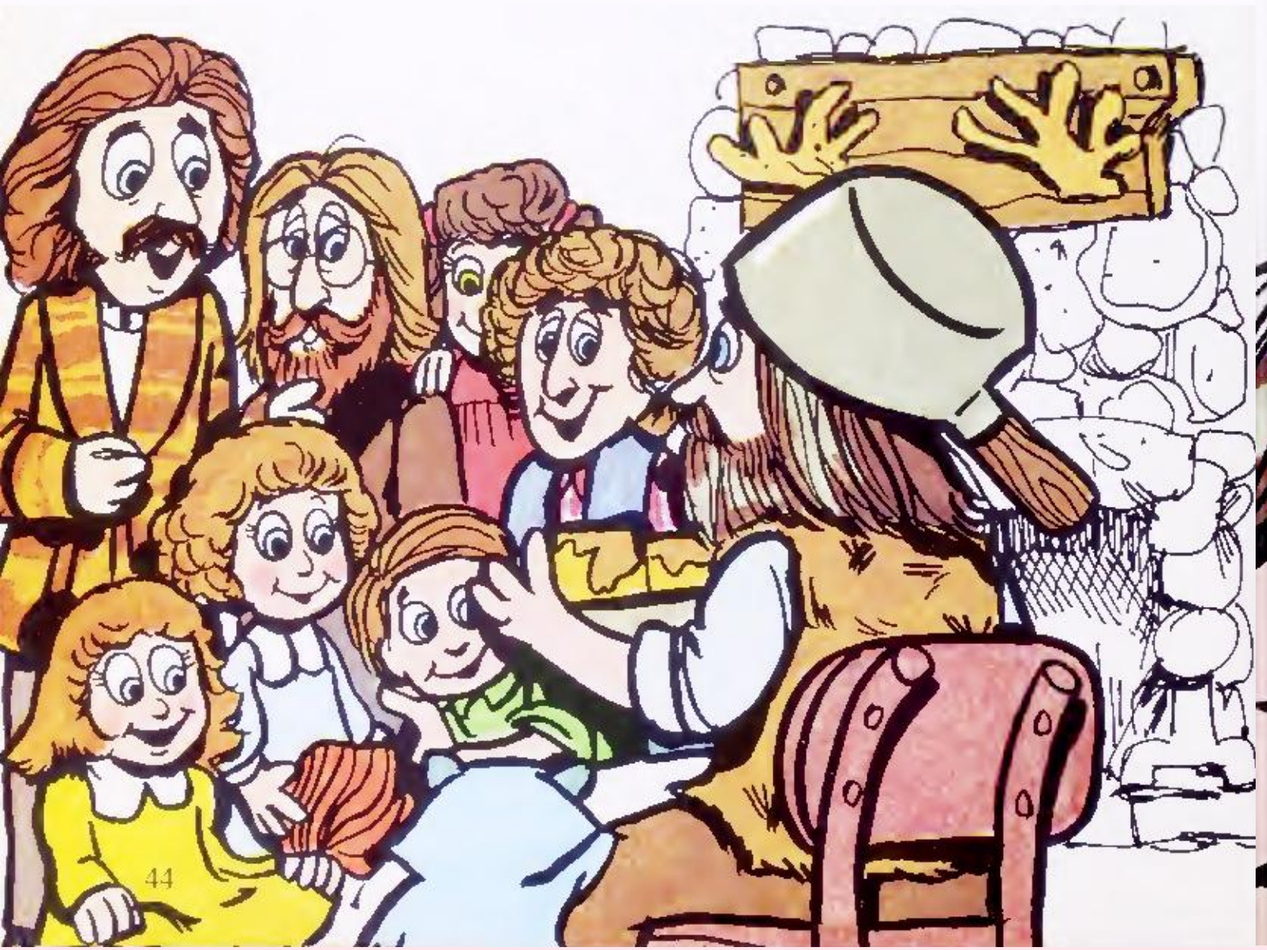

जब खबरों का गंभीर विषय निपट जाता, तो जॉनी अपनी कुछ कहानियाँ भी सुना देता। बच्चे हमेशा हँस पड़ते, जब वह उस लड़के की कहानी सुनाता जिसने इतनी बड़ी मछली पकड़ी कि उसे कंधे पर उठाकर ले जाना पड़ा और उसकी पूँछ ज़मीन पर घिसटती रही।

"उसने तीन दिन तक मछली की दावत की, और जब सब खत्म हो गया, तो उसने उसकी हड्डियाँ एक नौका के नाविक को बेच दीं, ताकि वह उन्हें चप्पू के रूप में इस्तेमाल कर सके!"

जॉनी एपलसीड रेड इंडियंस को उतना ही अच्छी तरह जानता था जितना वह गोरे बसने वालों को जानता था। उनसे उसने जलन को शांत करने की दवाइयाँ बनाना और बीमारियों को ठीक करने के लिए जड़ी-बूटियों की चाय तैयार करना सीखा। और रेड इंडियन लोग उसका सम्मान करते थे, क्योंकि वह एक शांतिप्रिय व्यक्ति था।

वह शांतिप्रिय था, इसलिए जब रेड इंडियन और गोरे बसने वालों के बीच कटु भावनाएँ उठीं तो जॉनी बहुत व्याकुल हुआ। गोरे लोग जब उनकी ज़मीन हड़पने लगे तो भारतीयों को बुरा लगा। अपने औज़ारों और सेब के बीजों के साथ चलते हुए जॉनी ने देखा कि इंडियन युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। उसने उन्हें गोरों के बारे में घृणा से बातें करते सुना।

"लड़ाई होगी," एक शाम कैंपफ़ायर के पास जॉनी के साथ बैठे रैंडी ने कहा। "पेड़ों में पक्षी इसकी बात करते हैं, और गिलहरियाँ बताती हैं कि उत्तर में एक युद्ध-दल देखा गया है। जॉनी एपलसीड, अगर तुम्हारे लाल भाइयों और गोरे भाइयों के बीच युद्ध हुआ तो तुम क्या करोगे?"

यह कठिन प्रश्न था। जॉनी का दिल भारी हो गया। "मैं जो भी कर सकूँगा, उसे रोकने की कोशिश करूँगा," उसने निश्चय किया, "लेकिन मैं किसी के खिलाफ—न लाल, न गोरे—हाथ नहीं उठाऊँगा!"

थोड़े ही समय बाद जॉनी ने रेड इंडियंस को युद्ध-रंग में देखा। उनके चेहरे कठोर और क्रोधित थे।

"यह हो रहा है!" रैंडी ने फुसफुसाकर कहा। "वे बसने वालों की झोपड़ियों पर हमला करने जा रहे हैं!"

"मैन्सफ़ील्ड का किलेबंद ठिकाना दूर नहीं है," जॉनी ने कहा। "मैं बसने वालों को चेतावनी दूँगा। वे वहाँ चले जाएँ, जिस पर रेड इंडियंस इतनी जल्दी हमला नहीं करेंगे।"

जॉनी दौड़ पड़ा, और अपने जीवन में पहली बार उसे सेब के बीजों की चिंता नहीं रही। अगर उसके थैले से कुछ बीज गिर भी गए, तो उसने ध्यान नहीं दिया। वह झोपड़ी-झोपड़ी दौड़ा। "रेड इंडियन हमला करने की तैयारी कर रहे हैं!" वह चिल्लाया। "सब कुछ छोड़ो! किलेबंदी की ओर भागो!"

बसने वाले किलेबंदी की ओर दौड़े, और जब रेड इंडियन झोपड़ियों पर झपटे तो उन्हें वे खाली मिलीं। लड़ने को कोई नहीं था। कोई हत्या नहीं हुई। उस समय के लिए बसने वाले सुरक्षित थे।

लेकिन वे अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रहने वाले थे।

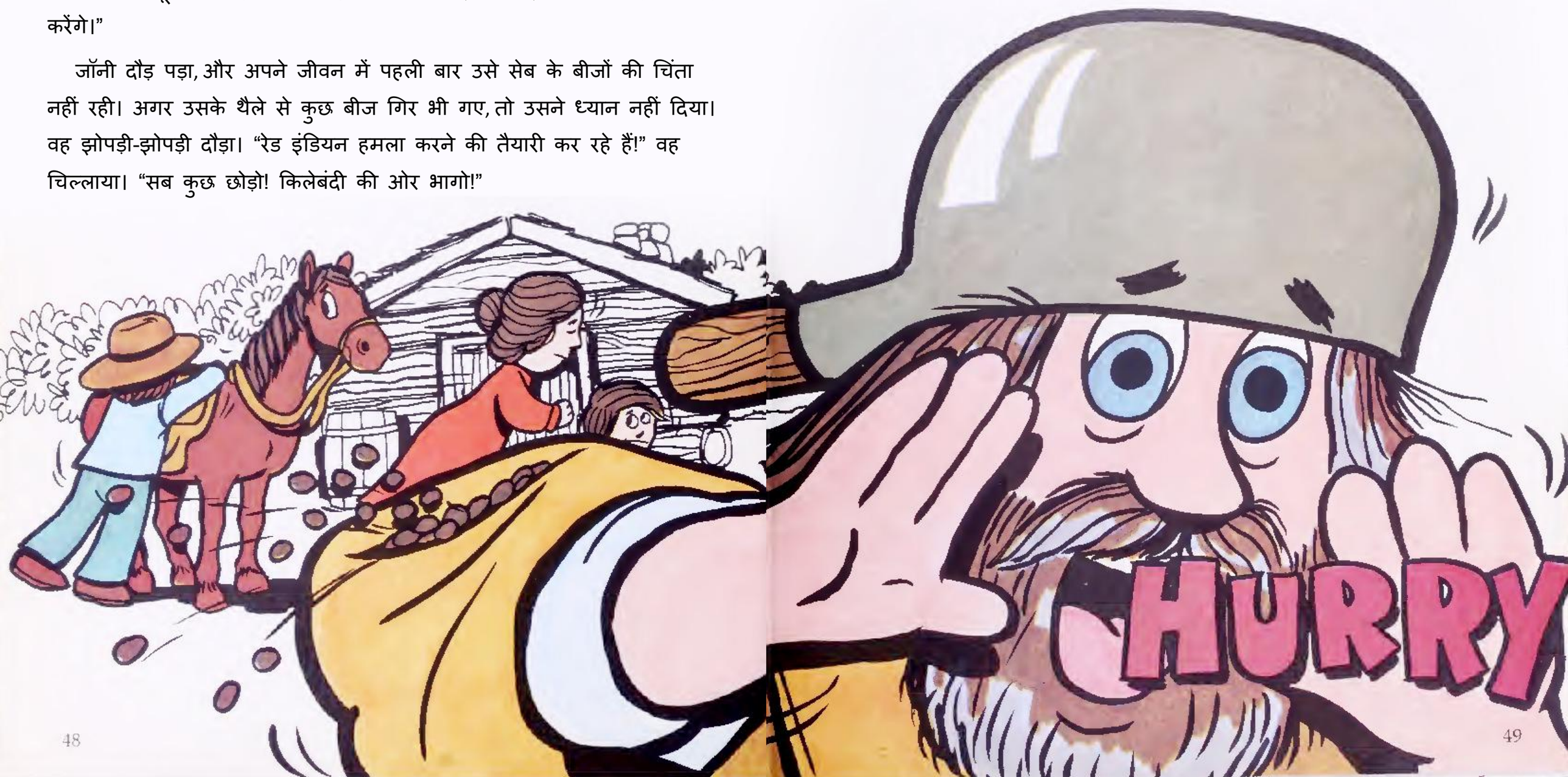

"अगर रेड इंडियन और योद्धा ले आए तो हम लोग हमले को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं हैं," किले के भीतर एक आदमी ने कहा। "इसके अलावा, हम यहाँ हमेशा नहीं रह सकते। हमारे पास भोजन और पानी कम है। किसी को माउंट वर्नन के किले तक जाकर सैनिकों को लाना होगा।"

लेकिन माउंट वर्नन तीस मील दूर एक छोटी बस्ती थी। घने जंगलों और आधी-साफ़ ज़मीन से होकर जाने की यात्रा का सोचकर गोरों के दिल बैठ गए।

तभी जॉनी एपलसीड बोला। वह अपने सिर पर खाना पकाने का बर्तन रखे फाटक के पास चुपचाप खड़ा था। "मैं जाऊँगा," उसने कहा। "अगर इससे एक भी जान बचती है, तो मैं जाऊँगा।"

वह तुरंत निकल पड़ा। वह दिन-रात चलता रहा। वह जल्दी करता हुआ नहीं लगता था, फिर भी उसने बहुत दूरी तय कर ली। रेड इंडियन लोगों ने उसे देखा और उसे बिना नुकसान पहुँचाए जाने दिया। वह शांतिप्रिय व्यक्ति था, और वे उसे अपना शत्रु मान ही नहीं सके।

माउंट वर्नन के सैनिक मैन्सफ़ील्ड में बसने वालों की मुसीबत सुनकर बेहद उत्तेजित हो उठे। वे हथियार लाने और गोला-बारूद जाँचने दौड़े।

"लेकिन हमें कोई मार्गदर्शक चाहिए," एक अधिकारी ने जॉनी से कहा। "क्या तुम हमें मैन्सफ़ील्ड तक का रास्ता दिखा सकते हो?"

जॉनी ने थकी हुई कराह भरी।

"तुम कर सकते हो," उसके छोटे दोस्त रैंडी ने फुसफुसाया। "थोड़ी देर आराम करो, फिर तुम्हें फिर से ताक़त महसूस होगी।"

जॉनी ने सिर हिलाया। "मुझे एक घंटा, और थोड़ा भोजन और पानी दे दीजिए," उसने अधिकारी से कहा। "फिर मैं चलने के लिए तैयार हो जाऊँगा।"

एक घंटे बाद जॉनी तैयार था। और फिर वह एक दिन और एक रात जंगल से होकर चला।

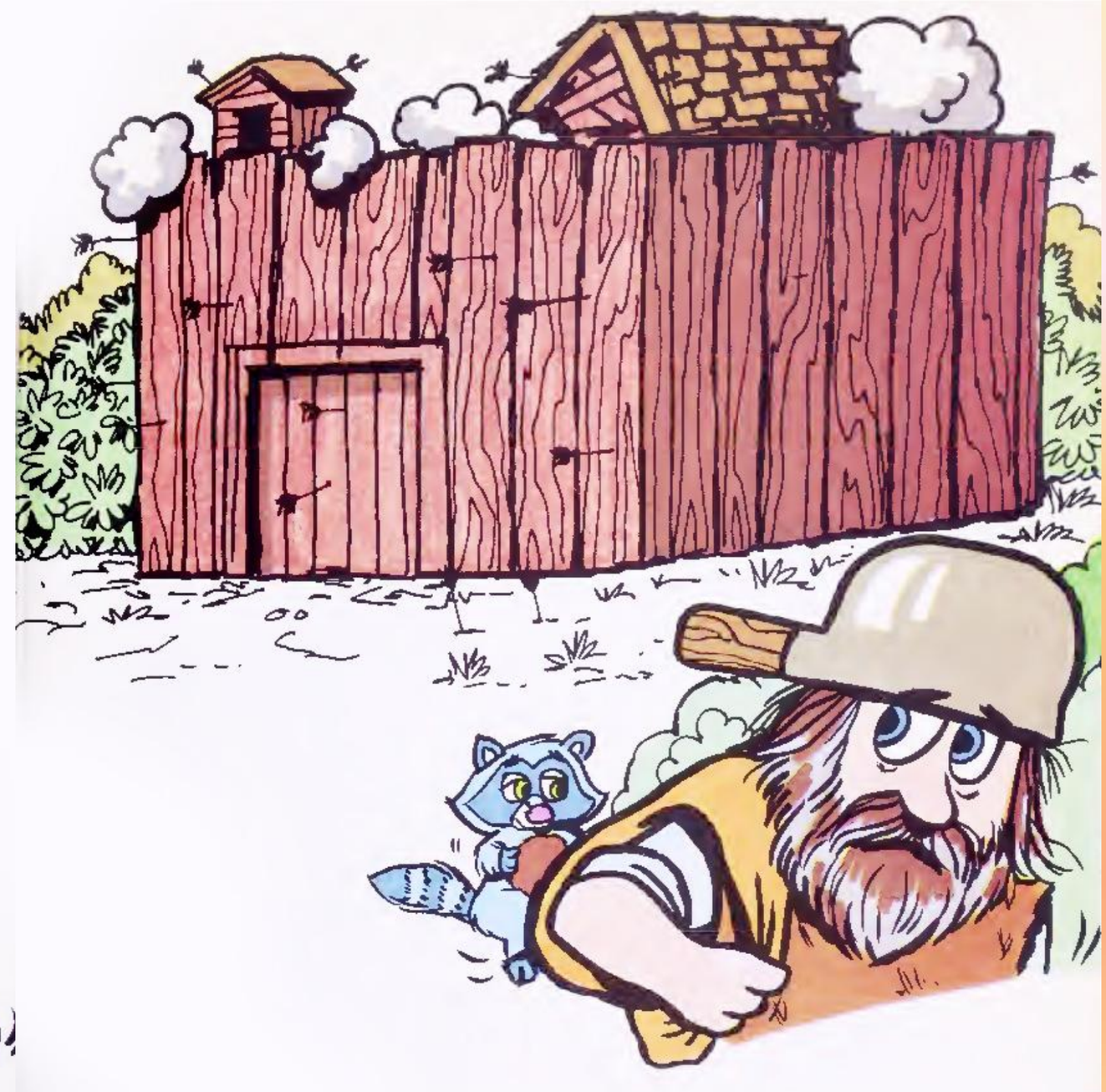

जब सैनिक मैन्सफ़ील्ड पहुँचे, तब तक रेड इंडियनों का हमला शुरू हो चुका था। माउंट वर्नन के लोग दहकती बंदूकों के साथ लड़ाई में कूद पड़े, और रेड इंडियन भाग खड़े हुए। लेकिन जब धुआँ छँटा, तो जॉनी एपलसीड भी ग़ायब था। शांति बनाए रखने के लिए उसने जो कर सकता था, कर लिया था। पर जब लड़ाई छिड़ ही गई, तो वह जंगल में ओझल हो गया।

सौभाग्य से, सीमांत प्रदेश के कठिन दिन हमेशा नहीं रहे। शांति फिर लौटी, और एक बार फिर जॉनी को अपनी सेब की बीजों के साथ बस्तियों में देखा गया। वह फिर अपने पेड़ों की देखभाल करता और खेतों पर रुककर बच्चों से मिलता।

और इस तरह साल बीतते गए। जॉनी के काले बाल धूसर हो गए, और जिन बच्चों को वह ओहायो, इंडियाना और इलिनोइस के घरों में गोद में खिलाया करता था—अरे, वे तो उन युवाओं के बच्चे और पोते-पोती थे जिनसे वह अपने युवावस्था में रास्तों पर मिला करता था।

"हम बूढ़े हो रहे हैं, जानते हो, जॉनी एपलसीड?" उसके मित्र रैंडी ने कहा।

"जो आदमी काफ़ी देर तक जीता है, उसका बूढ़ा होना तय है," जॉनी ने घोषित किया।

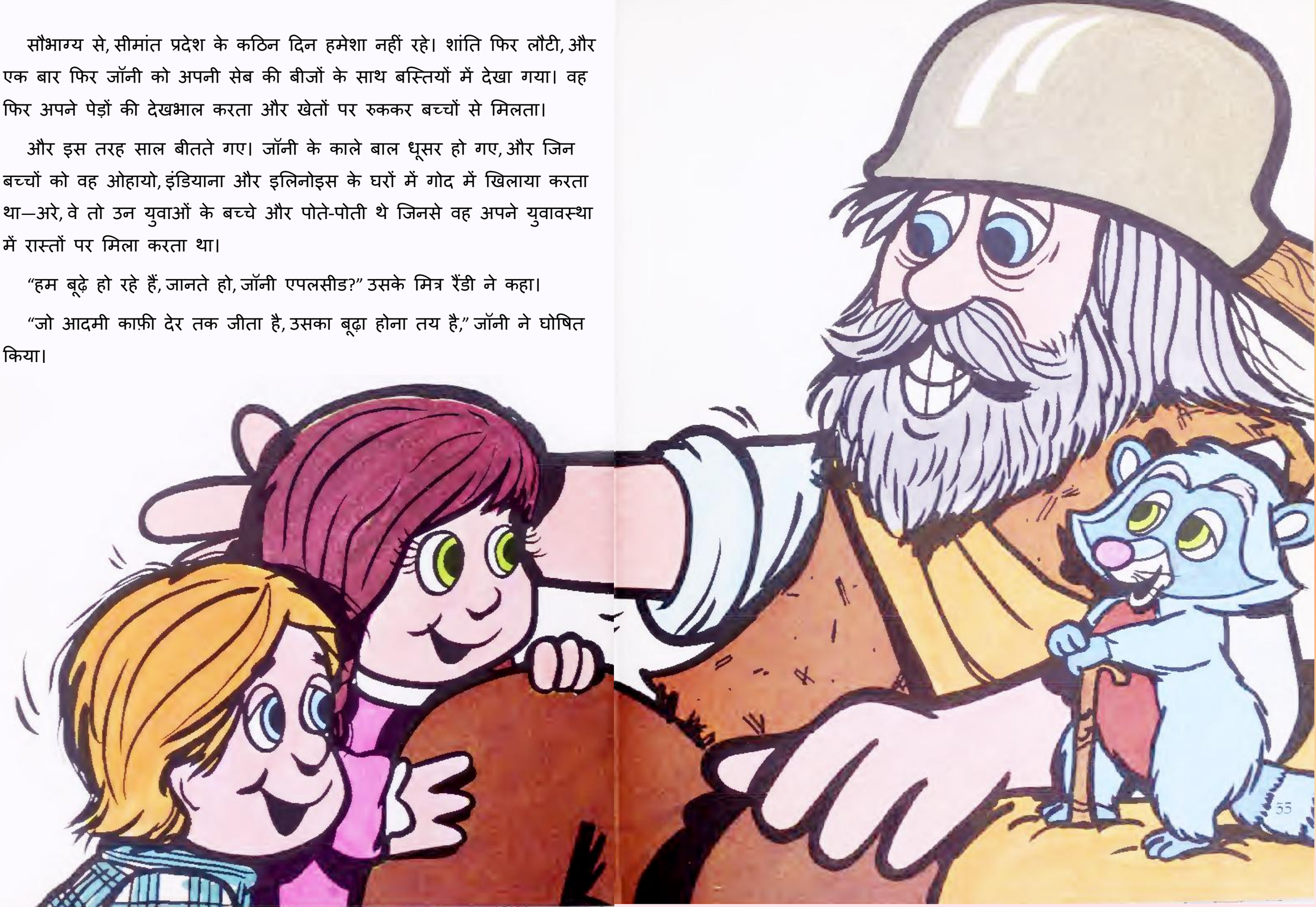

एक वसंत के दिन, जॉनी इंडियाना के फ़ोर्ट वेन के पास की ज़मीन में अपने पेड़ों की देखभाल कर रहा था। उस साल देर से बर्फ़ पड़ी थी—गीली और भारी—और यह याद रखने के लिए कि जल्द ही ज़मीन सेब के फूलों की गुलाबी मिठास से भर जाएगी, जॉनी के सारे प्रेम और विश्वास की ज़रूरत थी।

"अजीब है," जॉनी ने कहा। "मेरे दिल में एक तरह की थकान महसूस हो रही है। लगता है थोड़ी देर बैठकर आराम करूँ।"

फिर वह और रैंडी पेड़ों में से एक के नीचे साथ-साथ बैठ गए।

एक किसान ने जॉनी को वहीं पाया। उसे तेज़ बुख़ार था। वह उसे अपने घर ले गया—एक साधारण झोंपड़ी, जिसे वह उस इलाके में होने पर कभी-कभी इस्तेमाल करता था। उसने जॉनी को जड़ी-बूटी की चाय और वे अन्य उपचार दिए जो कभी जॉनी ने उसे दिए थे। लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

“जॉनी एपलसीड कल रात चल बसे,” किसान ने अगले दिन अपने पड़ोसियों से कहा। “वह उतनी ही शांति से गए, जितनी शांति से उन्होंने जीवन जिया!”

“शायद उसे लगता है कि स्वर्ग में सेब के पेड़ होंगे,” एक पड़ोसी ने कहा।

“और कौन कह सकता है कि वहाँ नहीं होंगे?” उसकी पत्नी ने पूछा।

यह ख़बर गाँव-गाँव फैल गई। जॉनी एपलसीड चुपचाप चल बसे—उतनी ही चुप्पी से जितनी चुप्पी से वह सब कुछ करते थे। वे अपने ही एक पेड़ के नीचे बैठे-बैठे बीमार पड़े थे। उनकी उम्र इकहत्तर वर्ष थी।

यह जॉनी की कहानी का अंत हो सकता था, सिवाय इसके कि लोग उसे भूल ही नहीं पाए। न उस भले से, मृदुभाषी जॉनी को—अपने सेब के बीजों के थैले और अद्भुत कहानियों के साथ। न उस जॉनी को, जिसके दयालु हाथ बीमार बच्चे के माथे पर होते थे। न उस जॉनी को, जो लाल और गोरे दोनों से इतना प्रेम करता था कि किसी से भी लड़ता नहीं था—हालाँकि दोनों को हानि से बचाने के लिए वह जंगल में तीस मील पैदल जाता और तीस मील लौट कर आता था।

और इस तरह जॉनी एपलसीड एक किंवदंती बन गया।

और निश्चित ही उसे किसी फलोद्यान में बैठकर पत्तों के बीच से सुनहरी धूप को आते देखना अच्छा लगता। निस्संदेह, उसे अपने पास एक-दो बच्चे बैठाकर अपनी कहानियाँ सुनाना अच्छा लगता। जीवन भर उसे सबसे अधिक खुशी पेड़ों के बढ़ने और बच्चों के पास इकट्ठा होने से ही मिली।

जॉनी ने जीवन भर प्रेम के साथ कदम बढ़ाए—उस प्रेम के साथ जो वह धरती पर रहने वाले हर जीव के लिए महसूस करता था। वह प्रेम उसके जाने के बाद भी बना रहा।

आज जॉनी एपलसीड के नाम पर स्कूल हैं। पार्क, बाग़ और फलों के उद्यान उसके सम्मान में बनाए और लगाए गए हैं। निस्संदेह, ये सब जॉनी को प्रसन्न करते होंगे।

सीमांत के दिन अब बीत चुके हैं, और जब तक आप चाँद पर सेब के पेड़ लगाने की योजना नहीं बनाते, आप ठीक वही काम नहीं कर सकते जो जॉनी ने किया। लेकिन आप अपने जीवन और उन लोगों के बारे में सोच सकते हैं जिनसे आप प्रेम करते हैं। आप उस प्रेम को दिखाने का कोई तरीका ढूँढ़ने की चाह रख सकते हैं, और शायद अधिक लोगों से अधिक प्रेम करना चाहें। अगर आप ऐसा करते हैं, तो संभव है कि आपका प्रेम आपको लौटकर वापस मिले। और जब आप प्रेम देते और पाते हैं, तो आप स्वयं को अधिक प्रसन्न व्यक्ति पाएँगे।

ठीक हमारे अच्छे मित्र जॉनी एपलसीड की तरह।

ऐतिहासिक तथ्य

जॉनी एपलसीड
(1774-1845)

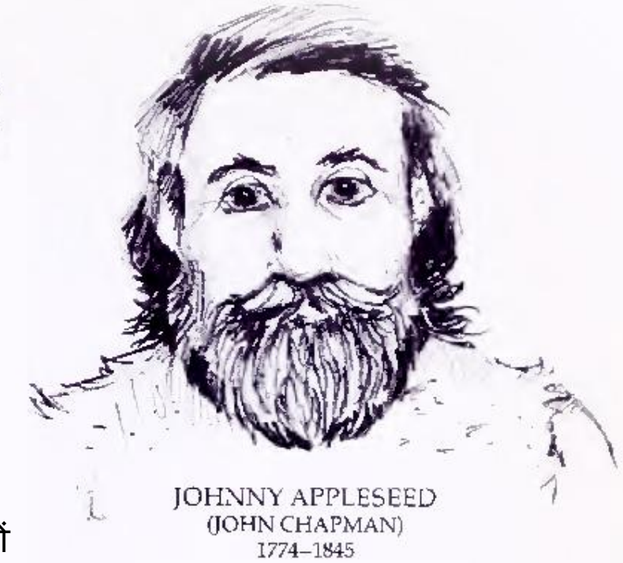

अमेरिका किंवदंतियों की भूमि है, और किंवदंतियाँ जीवन से बड़ी होने का ढंग रखती हैं। पॉल बुनयन तिरसठ कुल्हाड़ी के डंडों जितना ऊँचा था, और जब उसने एरिज़ोना में धरती पर अपनी कुदाल घसीटी तो ग्रैंड कैन्यन बन गया। पेकोस बिल टेक्सास से दहाड़ता हुआ निकला, बवंडर को लस्सो से पकड़ लिया और उसे हवा की एक हल्की झोंक में बदल दिया।

लेकिन फिर जॉनी एपलसीड है, और वह बिल्कुल अलग तरह का लोक-नायक है। वह न तो लड़ाका था, न महान कारनामे करने वाला। और वह मिथक नहीं है। पॉल बुनयन और पेकोस बिल के विपरीत, जॉनी वास्तव में एक जीता जागता इंसान था।

वह 1774 में मैसाचुसेट्स में जॉन चैपमैन के रूप में पैदा हुआ। वह एक साधारण परिवार का साधारण लड़का था, इसलिए उसके शुरुआती जीवन के बारे में बहुत कुछ दर्ज नहीं है। माना जाता है कि उसके पिता ने अमेरिकी क्रांति के दौरान जनरल वॉशिंगटन के साथ लड़ाई लड़ी, और जॉनी जब बहुत छोटा था, तभी उसकी माँ का देहांत हो गया। उसके पिता ने जल्द ही पुनर्विवाह कर लिया, इसलिए जॉनी और उसकी बड़ी बहन एलिज़ाबेथ ऐसे घर में बड़े हुए जहाँ कई छोटे सौतेले भाई-बहन भी थे।

परंपरा कहती है कि जॉनी अकेलापन पसंद करने वाला बच्चा था, और उसे घर से दूर भटककर जंगल में लंबी यात्राएँ करना अच्छा लगता था, जहाँ वह पक्षियों और जानवरों की आदतों का अध्ययन करता था।

जब जॉनी अठारह वर्ष का था, तब वह और उसका भाई ओलियन की यात्रा पर गए, वह इन लड़कों के लिए एक अद्भुत साहसिक अनुभव था। उन्होंने पूरे न्यूयॉर्क राज्य को पैदल पार किया—संभवतः ऑलबनी से पश्चिम की ओर चलते हुए।

ओलियन यात्रा के तुरंत बाद के वर्षों में जॉनी कहाँ-कहाँ रहा, यह निश्चित नहीं है; लेकिन लगभग पच्चीस वर्ष की उम्र में वह ओहायो नदी की घाटी में दिखाई दिया और अपने जीवन का कार्य शुरू किया—नई ज़मीन में बसने वालों को बाइबल पढ़कर सुनाना, और पूरे सीमांत क्षेत्र में सेब के पेड़ लगाना।

जॉनी लगभग पचास वर्षों तक रोपण करता और उपदेश देता रहा। वह अग्रदूतों के लिए एक जाना-पहचाना चेहरा था, और रेड इंडियन उसका सम्मान करते थे और उसे औषध-पुरुष मानते थे, क्योंकि वह सेब के पेड़ों के साथ-साथ जड़ी-बूटियाँ भी लगाता था, और वह शांत करने वाली चाय बना सकता था, तथा घावों और जलन को ठीक करने के लिए लेप तैयार कर सकता था।

संभवतः 1812 में जॉनी मैन्सफ़ील्ड अपनी किसी सौतेली बहन के घर में रह रहा था, जब रेड इंडियंस ने वहाँ के बसने वालों पर हमला करने का निश्चय किया। निश्चित रूप से हम जानते हैं कि सैनिकों से मदद लाने के लिए माउंट वर्नन, ओहायो के किले तक जाने के लिए स्वयंसेवक बनने वाला जॉनी ही था। रास्ते में उसने कई बसने वालों को होने वाले हमले की चेतावनी दी।

सीमांत पर जॉनी को भले ही कुछ लोग एक छोटा-सा संत मानते हों, लेकिन यह संदेहास्पद है कि वह स्वयं को बहुत गंभीरता से लेता था। एक रविवार चर्च में एक अतिथि उपदेशक ने सभा को डाँटा कि वे ऐसा कोई व्यक्ति प्रस्तुत नहीं कर सकते "जो, आदिम ईसाई की तरह, नंगे पाँव और टाट पहने स्वर्ग की ओर चलता हो।" जॉनी प्रसन्न होकर नंगे पाँव, पुराने बोरे से बनी कमीज़ पहने, मंच तक टहलता हुआ गया। "यह रहा आदिम ईसाई!" वह चिल्लाया, और जब उपदेशक उलझन में पीछे हट गया, तो वह भी उतना ही खुश होकर ठहाका लगाने लगा जितना कोई और।

जॉनी की मृत्यु इंडियाना के फ़ोर्ट वेन के पास निमोनिया से हुई, जब वह अपने बहत्तरवें वर्ष में था। जॉनी द्वारा लगाए गए फलोद्यान बहुत पहले ही समाप्त हो चुके हैं, क्योंकि पेड़ भी सदा नहीं जीते। लेकिन जॉनी के अद्भुत मिशन की कहानी समाप्त नहीं हुई है, और शायद कभी होगी भी नहीं। वह एक अनोखा व्यक्ति था, जिसने एक अद्भुत समय में जीवन जिया, और जब तक सेब के पेड़ रहेंगे, हम उसे याद करेंगे और उसकी कहानी सुनाते रहेंगे।